प्रेस विज्ञप्ति

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय

16 नवंबर 2024
नई दिल्ली

लोकसभा अध्यक्ष ने आज सीएजी के चतुर्थ ऑडिट दिवस का उद्घाटन किया

माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला ने आज नई दिल्ली में चतुर्थ ऑडिट दिवस समारोह का उद्घाटन किया। ऑडिट दिवस 1860 में भारत के प्रथम महालेखापरीक्षक की ऐतिहासिक नियुक्ति का प्रतीक है। इस कार्यक्रम में भारत में वित्तीय निगरानी सुनिश्चित करने एवं सुशासन को बढ़ावा देने में संस्था के 164 वर्षों के योगदान का स्मरण किया गया।

माननीय अध्यक्ष ने भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) एवं संपूर्ण लेखापरीक्षा समुदाय को शासन में जवाबदेही एवं पारदर्शिता को मजबूत करने में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए बधाई दी। अध्यक्ष ने भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) की समृद्ध विरासत की प्रशंसा की तथा विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त संस्थान के रूप में इसके विकास पर प्रकाश डाला, जो अपनी विशिष्टता एवं विश्वसनीयता के लिए जाना जाता है।

अध्यक्ष ने इस बात पर जोर दिया कि लेखापरीक्षा में पिछले कुछ वर्षों में काफी बदलाव आया है और यह वित्तीय अनुशासन, पारदर्शिता एवं शासन में सुधार लाने में एक मार्गदर्शक शक्ति बन गई है। उन्होंने सार्वजनिक निधियों के उपयोग का मूल्यांकन करने तथा स्थानीय शासन और सामाजिक कार्यक्रमों का लेखापरीक्षण करके सामाजिक-आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने में नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार किया।

नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) के वैश्विक कद को स्वीकार करते हुए, अध्यक्ष ने संस्था को एशियन एसोसिएशन ऑफ सुप्रीम ऑडिट इंस्टीट्यूशन (एएसओएसएआई-एसोसाई-ASOSAI) (2024-27) की अध्यक्षता ग्रहण करने और 16वीं एशियन एसोसिएशन ऑफ सुप्रीम ऑडिट इंस्टीट्यूशन (एएसओएसएआई-एसोसाई-ASOSAI) सभा की सफल मेजबानी के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि भारत की लेखापरीक्षा पद्धतियां विश्वभर में मानक बन गई हैं और भारत की लेखापरीक्षा पद्धतियों का अध्ययन करने और उन्हें अपनाने के लिए 50 से अधिक देशों के सरकारी अधिकारियों और अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडलों ने भारत का दौरा किया है।

अध्यक्ष ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता सहित उभरती प्रौद्योगिकियों को सक्रियता से अपनाने के लिए सीएजी की प्रशंसा की, जिससे इसकी लेखापरीक्षा प्रक्रियाएं मजबूत हुई हैं और पारदर्शिता बढ़ी है। उन्होंने लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों की

जांच करने, रचनात्मक चर्चा को बढ़ावा देने एवं वित्तीय जवाबदेही सुनिश्चित करने में वरिष्ठ विपक्षी सदस्यों की अध्यक्षता वाली संसदीय समितियों की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी प्रकाश डाला।

अध्यक्ष ने वर्तमान नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री गिरीश चंद्र मुर्मू के प्रति आभार व्यक्त किया तथा पूर्व नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षकों, लेखापरीक्षा अधिकारियों तथा कर्मचारियों के योगदान की सराहना की जिन्होंने इस संस्था को अद्वितीय बनाया है। उन्होंने राष्ट्र को सुशासन एवं विकसित भारत की ओर ले जाने में उनके निरंतर प्रयासों के महत्व को रेखांकित किया। अध्यक्ष ने पुनः कहा कि नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्य लोकतंत्र के लिए अपरिहार्य है और यह वैश्विक स्तर पर शासन पद्धतियों में उत्कृष्टता को प्रेरित करता रहेगा।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी), श्री गिरीश चंद्र मुर्मू ने इस अवसर पर उपस्थित होने के लिए अध्यक्ष को धन्यवाद दिया और संस्था की विरासत एवं दूरदर्शिता के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने ऑडिट दिवस के महत्व पर जोर दिया क्योंकि यह एक ऐसा अवसर है जो संस्था की विश्वसनीयता को पुष्ट करता है और सुशासन के प्रति प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है। श्री मुर्मू ने संस्था द्वारा की गई प्रगति को रेखांकित किया, सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन को बढ़ाने और सुधारात्मक जवाबदेही पर की गई पहलों पर प्रकाश डाला।

श्री मुर्मू ने सामाजिक प्रासंगिकता की लेखापरीक्षा पर संस्था के फोकस के बारे में विस्तार से बताया जिसका लोगों के जीवन और आजीविका पर असर पड़ता है। उन्होंने संस्थागत तंत्र का उल्लेख किया, जिसे लेखापरीक्षा प्रक्रिया के माध्यम से लेखापरीक्षा प्रयासों को सही ढंग से तुल्यकालित (समन्वय स्थापित) करने के लिए स्थापित किया गया था।

नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) ने राजकोट में स्थानीय शासन की लेखापरीक्षा के लिए अंतरराष्ट्रीय केंद्र (आई कॉल – आईसीएएल -iCAL) की स्थापना के बारे में भी बताया तथा इसे स्थानीय शासन लेखापरीक्षा के लिए क्षमता निर्माण बढ़ाने में एक ऐतिहासिक उपलब्धि बताया। यह पहल जमीनी स्तर पर शासन को मजबूत करने और सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों के बीच वैश्विक ज्ञान साझाकरण एवं सहयोग को बढ़ावा देने के लिए नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है।

अंतरराष्ट्रीय पटल पर, नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) ने वैश्विक लेखापरीक्षा मंचों पर संस्था के नेतृत्व पर प्रकाश डाला तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन, रासायनिक हथियार निषेध संगठन, अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन, अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी और खाद्य एवं कृषि संगठन जैसे कई प्रमुख अंतरराष्ट्रीय संगठनों के लिए बाह्य लेखापरीक्षक के रूप में इसकी भूमिका का हवाला दिया। उन्होंने 2024-2027 के कार्यकाल के लिए एशियाई सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों के संगठन (एसोसाई) की अध्यक्षता ग्रहण करने की महत्वपूर्ण उपलब्धि का उल्लेख किया।

श्री मुर्मू ने लेखापरीक्षा प्रक्रियाओं में प्रौद्योगिकी की परिवर्तनकारी भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने लेखापरीक्षा प्रक्रिया स्वचालन के लिए वन आईएएडी वन सिस्टम (एक पहचान एक प्रणाली) (ओआईओएस) नाम की एंड-

टू-एंड एंटरप्राइज-वाइड (आद्योपांत उद्यम-वार) सूचना प्रौद्योगिकी प्रणाली का उल्लेख किया। उन्होंने उभरते परिदृश्य में एआई एवं डेटा जैसी उभरती प्रौद्योगिकी के साथ संस्थान की सक्रिय भागीदारी को रेखांकित किया। उन्होंने डेटा प्रबंधन और विश्लेषण केंद्र पर भी गर्व व्यक्त किया, जो मार्गदर्शन केंद्र और अग्रणी अनुसंधान सुविधा दोनों के रूप में कार्य करता है, जबकि वैश्विक स्तर पर सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों के साथ क्षमता निर्माण पहलों के माध्यम से सीएजी की वैश्विक मान्यता को प्रदर्शित करता है।

अपने 41,000 कर्मचारियों के श्रम-बल को मान्यता देते हुए, भारत के सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थान (एसएआई इंडिया-SAI INDIA) लोक लेखापरीक्षा और लेखांकन में नवाचार और उत्कृष्टता के लिए अपने पुरस्कारों के माध्यम से उत्कृष्ट योगदान का जश्न मनाता है तथा अपने मिशन में विश्वास और आत्मविश्वास को बढ़ाता है।

चतुर्थ ऑडिट दिवस भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की चिरस्थायी विरासत तथा जवाबदेही और पारदर्शिता के सिद्धांतों को कायम रखने के उनके अटूट संकल्प का प्रमाण है। अध्यक्ष और नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक दोनों ने राष्ट्र निर्माण और शासन में संस्था की महत्वपूर्ण भूमिका को दोहराया।

BSC/SS/IK/35-24